श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

શ્રી કૃષ્ણ પ્રણામી ધર્મ પત્રિકા

श्रीकृष्ण जन्माष्टमीकी मंगलमय शुभकामनायें

अगस्त २०११

वर्ष ८३ श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर अंक ८

www.krishnapranami.org

श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके कर्मठ सन्त एवं श्री कृष्ण प्रणामी मूलमिलावा तथा
श्री प्राणनाथ हस्पिटल सुरतके संस्थापक स्वामी श्री तारतम ज्योतिजी महाराजके
धामगमनोपरान्त आयोजित अन्तिम यात्रा एवं प्रार्थना सभाके विविध दृश्य ।

श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर अहमदाबादमें आयोजित त्रि-दिवसीय सत्संग
समारोहमें आशीर्वाद देते हुए परम पूज्य आचार्य महाराजश्री ।

शिकागो अमेरिकामें आयोजित अखण्ड पारायण एवं सत्संगमें सुन्दरसाथको
आशीर्वाद देते हुए परम पूज्य आचार्य महाराजश्री ।

श्रीकृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

संस्थापक : ब्रह्मलीन आचार्य श्री १०८ धनीदासजी महाराज

वि.सं : २०६८ | निजानन्दाब्द : ४२९ | बुद्धजी शाका : ३३४

वर्ष : ८३ | अगस्त २०११ | अंक : ८

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वामित्व } जगद्‌गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

मुद्रण एवं प्रकाशन स्थल } श्री ५ नवतनपुरी धाम– खीजड़ा मन्दिर
जामनगर – ३६१ ००१ (गुजरात) भारत

सम्पादक : स्वामी लक्ष्मण चैतन्य *एवं* श्री कनकराय व्यास

वार्षिक शुल्क रु. १००/- | १५ वर्षीय शुल्क रु. १०००/-

पता : श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका, श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर ३६१ ००१
फोन : (०२८८) २६७ २८२९ फेक्स (०२८८) २५५ १३५३
E-mail : navtanpuri@gmail.com /navtanpuri@krishnapranami.org
website : www.krishnapranami.org / www.krishnadhamusa.org

श्री कृष्ण जन्माष्टमी एवं राधा अष्टमी

श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके लिए ही नहीं अपितु पूरे जगतमें श्री कृष्णजी एवं श्री राधाजीका विशेष महत्त्व है। पूर्णब्रह्म परमात्माकी लीलाएँ इस जगतमें व्रज, रास और जागनी लीलाके रूपमें सम्पन्न हुई। ये लीलाएँ श्री कृष्णजी, श्री राधाजी एवं सखियों की हैं इसलिए उनके अवतरणको उत्सवके रूपमें मनाया जाता है। श्री ५ नवतनपुरी धाममें श्री कृष्ण जन्माष्टमी एवं राधा अष्टमीका उत्सव बड़े धूमधामसे मनाया जाता है। इस बार जन्माष्टमी दिनांक २२-०८-२०११ एवं श्री राधाष्टमी दिनांक ०५-९-२०११ को है।

श्री कृष्णजन्माष्टमी तथा राधाष्टमीके सुअवसर पर सभी सुन्दरसाथजीको श्री ५ नवतनपुरी धामकी ओरसे भूरी भूरी शुभकामना

आओ इसे मंदिर बनायें

जगद्‌गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी ॅमिहाराज

सुन्दरसाथजी ! हमलोग प्रातः ऊठकर शौच स्नान आदिसे निवृत्त हो परब्रह्म परमात्मा श्री राजजीकी प्रार्थना करते हुए उनका आवाहन करत हैं, **आवोजी वाला मारे घेर** अर्थात् हे प्रियतम परमात्मा श्री राजजी ! आप हमारे घरमें आ जायें । अपने गाँवमें मन्दिर हो तो वहाँ पुजारीजी भी प्रातः श्री राजजीका आवाहन करते हुए यही प्रार्थना गाते हैं। किसीके घरमें भी पूजास्थान हो तो वहाँ भी इसी प्रकार इसी भावसे प्रार्थना होती है। हम घरसे बाहर या कहीं भी हों मन्दिर सामने न होने पर भी शौच स्नानादिसे निवृत्त होकर कहीं भी बैठकर किसी भी स्थितिमें इसी प्रकार श्री राजजीकी प्रार्थना कर सकते हैं ।

हमारी प्रार्थनामें हम श्री राजजीको अपने घरमें बुला रहे होते हैं। मन्दिरको हम सभीने श्रीराजजीका घर माना होता है। इसे शुद्ध और पवित्र रखना चाहते हैं। मन्दिरकी पवित्रता बनी रहे इसका खास ख्याल रखते हैं और आवश्यकता पड़ने पर स्वयं भी साफ सफाईमें जुट जाते हैं। यह हमारा प्रेम है, श्रद्धा है, धर्मके प्रति बनी हुई अच्छी भावना है। ऐसा ही होना चाहिए। श्रद्धा, प्रेम और विशुद्ध भावोंके बिना मनुष्य मनुष्य नहीं रहता ।

हमारे निवासस्थानमें भी श्री राजजीके लिए छोटा-सा(मन्दिर) होता है। यदि किसीके पासमें ऐसा न हो तो उन्हें तत्काल ऐसा बना लेना चाहिए। मन्दिर-पूजास्थानके बिना घरकी कोई शोभा नहीं होती है। इस छोटे-से गृह मन्दिरमें हम श्री राजजीको बुला रहे हैं तो उसे अच्छी तरह सजायें। जगह भी ऊंची होनी चाहिए एवं वाघावस्त्र भी स्वच्छ होने चाहिए ।

मन्दिर-पूजास्थानमें जाकर हम झूठ बोलना नहीं चाहते हैं। कभी मनमें अशान्ति हुई हो तो भी हम वहाँ जाकर राहतका अनुभव कहते हैं।

बच्चोंको भी कहते हैं कि तुम वहाँ जाओ, प्रणाम करो, थोड़ी देर बैठकर प्रार्थना करो । वैसे परब्रह्म परमात्मा तो सब स्थानोंमें हैं । उनका अभाव कहीं भी नही हैं फिर भी हमने उस स्थान पर अपनी मान्यता बाँधी है । किसी एक ही स्थानको निश्चित किया है और वहाँ जाकर अपना मस्तक नमाते हैं, अपनी श्रद्धा समर्पित करते हैं । यह हमारी मान्यता है । ऐसा होना भी चाहिए नहीं तो जीवन ही निरर्थक होगा, अशान्त होगा ।

जीवनमें अपनी श्रद्धा समर्पित करनेका स्थान अत्यन्त आवश्यक होता है । अपना दुःख, कष्ट, अशान्तिको व्यक्त करनेका स्थान होना चाहिए । चाहे वह गुरु जनोंके चरण हों या मन्दिर हो । फिर भी जीवनमें अशान्ति है, दुःख है, कष्ट है, ऐसा क्यो ? जरा सोचिए । हमने मंदिरकी पवित्रताके लिए खास ख्याल रखा । घरके मंदिरकी मर्यादा भी रखी । वहाँ परब्रह्म परमात्माको बुलाया । उनकी पूजा की, भोग लगाया सब कुछ किया फिर भी हमारा मन क्यों अशान्त रहता है ?

सज्जनो ! याद रखें, दो घरों (सार्वजनिक मंदिर तथा गृह मन्दिर)में हमने श्री राजजीको बुलाया । किन्तु अभी एक महत्त्वपूर्ण घर तो और बाकी है । उन दोनों घरोंको तो हमने स्वयं अपने परिश्रमसे बनाया है । किन्तु यह तीसरा घर हमें परमात्माके द्वारा प्राप्त हुआ है । यह है **मानव शरीर** । यह परमात्माका बनाया हुआ मन्दिर है । यदि हम इसको मन्दिरके रूपमें रखना चाहते हैं तो हमारी कितनी बड़ी भूल हो रही है कि हम इसमें श्री राजजीको नहीं बुला रहे हैं । जो घर सदैव (आजीवन) हमारे साथ रहता है उसमें तो हमने श्री राजजीको नहीं बुलाया और केवल बाहरके घरमें ही बुलाते रहे तो फिर शान्ति कैसे मिलेगी ? कैसे आनन्दका अनुभव होगा ?

मानव शरीररूप इस मन्दिरमें श्री राजजीके लिए बहुत सुन्दर सिंहासन है उसे हृदय कहते हैं । इस हृदयरूप सिंहासनमें हम श्री राजजीको सदाके लिए रखें । तभी सुख, शान्ति एवं आनन्दका अनुभव होगा । याद रखें, जिस सिंहासनमें राजजीको रखना चाहते हैं वह स्वच्छ होना चाहिए । उसको पवित्र रखें । उसमें गन्दा न डालें । सिंहासनके साथ साथ मन्दिर (शरीर)को भी शुद्ध रखें । शुद्धि दो प्रकारकी होती है, एक बाह्य दूसरी

आन्तरिक। शौच स्नानादिसे बाह्य शुद्धि होती है तो शुद्ध आहार–खानपान, शुद्ध व्यवहार–रहन सहन, बोली, चालीसे अन्दरकी शुद्धि आरंभ होती है। धीरे धीरे अन्तःकरणसे राग द्वेष, ईर्षा आदि दूर होनेपर अन्दरकी शुद्धि हो जायेगी, तभी हमारे अन्तःहृदयमें श्री राजजीका वास हो पायेगा।

इसीलिए प्रेमी सुन्दरसाथजी ! इस शरीरको हम मन्दिर बनायें, कूडादान नहीं। हृदय(दिल)में परब्रह्म परमात्माको रखेंगे तभी यह मन्दिर बनेगा। किन्तु काम, क्रोध, राग, द्वेष, ईर्षा, चुगली निन्दासे अन्तःकरणको भरेंगे एवं आहार विहार भी गलत होंगे तो यह शरीर कूडादान कहलायेगा। जैसे खराब वस्तुयें कूडादानमें डाली जाती हैं वैसे ही इन कुभावोंको अन्तःकरणमें रखकर हम इस शरीरको कूडादान बना रहे हैं। इस पात्रको बाहर एवं भीतर दोनों ओरसे साफ रखें। शौच, स्नानसे भी शरीरको शुद्ध रखें और खान, पानसे भी शुद्ध रखें। किसी भी प्रकारके व्यसनोंमें न पड़े।

गंदगीको अन्दर डालनेपर अन्दरसे भी दुर्गन्ध ही आयेगी। कटु वचन, चुगली, निन्दा, खराब विचार ये सब दुर्गन्ध हैं। आज दुनियामें दुर्गन्ध फैल रहा है। प्राय सभीके अन्दरसे दुर्गन्ध ही आती है। इस पात्रको शुद्ध रखें। भक्ति, प्रेम और सद्भावनाकी सुगन्धि इससे आती रहे ऐसी व्यवस्था करें। तभी हमारे हृदयरूप सिंहासनमें परब्रह्म परमात्मा श्रीराजजी आकर विराजमान होंगे और यह शरीर मन्दिर कहलायेगा। आइये, इसे मन्दिर बनायें।

प्रातःकालीन प्रार्थनामें सदैव अपने शरीररूप घरमें श्री राजजीका आवाहन करनेका अभ्यास करें। **आवोजी वाला मारे घेर आओ**का तात्पर्य श्री राजजीको अपने हृदयमें रहनेके लिए आमन्त्रण देना है। यदि हमारा आमन्त्रण श्रद्धा, प्रेम, विनय और भक्तिपूर्वक होगा तो श्री राजजी हमारे हृदयमें अवश्य पधारेंगे। जो सुख, शान्ति और आनन्दके लिए हम बाहरके बनाये हुये घरमें श्रीराजजीको बुलाना चाहते हैं यदि उनके द्वारा ही बनाये गये इस शरीरमें उनको बुलानेका प्रयत्न करेंगे तो हमें कभी भी निराश होना नहीं पड़ेगा।

–सत्संग सुधासे साभार

परम तत्त्व श्री कृष्ण

ब्रह्मलीन आचार्य श्री १०८ धर्मदासजी महाराज

सज्जनो ! पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री कृष्ण उनका धाम परमधाम तथा उनकी दिव्य लीलाका रहस्य केवल अनुभव गम्य है । उन्हें शब्दद्वारा व्यक्त करना कठिन ही नहीं दुष्कर भी है परन्तु इनको अनुभूतिका विषय बनानेके लिए हमें शास्त्रों एवं सन्त महापुरुषोंके वचनोंका अनुसरण करना आवश्यक है । पूर्णात् पूर्ण परम तत्त्व श्री कृष्णमें किन किन अलौकिक भावोंका अन्तर्भाव हुआ है इस तथ्यको जब तक अच्छी तरह नहीं जाना जाता तब तक श्री कृष्णके वास्तविक स्वरूपका परिचय प्राप्त नहीं हो सकता । अतः आइए, हम श्री कृष्णके स्वरूपको जाननेके लिए शास्त्रोंके गूढ़ रहस्यको समझें ।

शास्त्रोंने कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् कहकर श्री कृष्णको देवाधिदेव जगद्गुरुके रूपमें माना है परन्तु सामान्य व्यक्ति इस बातसे अनभिज्ञ हैं । वे राम, परशुराम, नृसिंह, आदि अवतारोंकी तरह श्री कृष्णको भी द्वापर युगके अन्तमें कंसके अत्याचारोंसे प्रजाको बचानेके लिए अवतार लेकर आई हुई भगवान विष्णुकी शक्ति मानते हैं । वस्तुतः अन्य अवतारोंने भी किसी न किसी रूपमें आततायियोंका विनाश किया है और श्री कृष्णने भी कंसका वध एवं महाभारत युद्धमें कौरव पक्षोंका वध कर दुष्ट व्यक्तियोंको मारा है परन्तु श्री कृष्णके सम्बन्धमें कुछ और भी बातें हैं जो अत्यन्त जानने एवं मनन करने योग्य हैं । जो व्यक्ति पुराणोंका अनुशीलन करते हैं उन्हें यह बात भलीभांति समझमें आती है कि शास्त्रोंने श्री कृष्णको परब्रह्म व परमात्माके रूपमें माना है अर्थात् परब्रह्म तत्वका अन्यतर नाम ही श्री कृष्ण है । उनसे ही अखिल ब्रह्माण्ड प्रकट हुआ है और इस ब्रह्माण्डके नियन्ता भगवान नारायण, सृष्टिकर्ता ब्रह्मा, पालनकर्ता विष्णु एवं संहारकर्ता महेश तथा अन्य देवी देवतायें भी प्रकट हुए हैं ।

वस्तुत: परब्रह्म परमात्मा श्री कृष्ण सांसारिक जीवोंको अपने स्वरूपका ज्ञान करानेके लिए एवं परमधामकी आत्माओंको अपने प्रेम और ऐश्वर्रयका बोध करवानेके लिए द्वापर युगके अन्तमें इस भूतल पर प्रकट हुए, इसके साथ साथ इन्हींके स्वरूपमें गोलोकीनाथ एवं भगवान विष्णुकी शक्ति भी शामिल हुई थी जिसने आततायियों एवं राक्षसोंका विनाश किया। अत एव श्री कृष्ण परब्रह्म तत्त्व हैं और यावन्मात्र शक्तियाँ उन पर ही आश्रित हैं।

मनुष्य अपनी अपनी कामना पूरी करने हेतु विभिन्न देवी–देवताओंकी उपासना करते हैं और धन, पुत्र, मान–प्रतिष्ठा की प्राप्तिके साथ साथ दु:ख कष्ट आदिसे छुटकारा भी प्राप्त कर लेते हैं परन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है। जब तक जीवको जन्म और मृत्युके चक्रसे छुटकारा नहीं मिलता तब तक जीवनमें सांसारिक सुख प्रतिष्ठा आदि प्राप्त करना केवल भूल मात्र है। क्योंकि जब शरीर ही क्षणिक माना गया है तो इसके लिए प्राप्त की गई सभी सुख सुविधायें और भी क्षणिक होती हैं। अत: मनुष्यको यह अच्छी तरह सोच लेना चाहिए कि वास्तविक सुख–सुविधा तो जन्म मृत्युके चक्रसे छूटनेके बाद ही मिलनेवाली है। जन्म मरणसे छुटकारा परब्रह्म तत्त्वके बिना अन्य किसीसे मिलनेवाला नहीं है। अत: उसी तत्त्वकी उपासना हेतु इस जीवको लगना चाहिए।

दूसरी बात यह भी है कि जिस प्रकार पेटमें भोजन डालनेके बाद शरीरके अन्य अंग प्रत्यङ्गोंको अलग अलग भोजन देनेकी आवश्यकता नहीं होती है वे उसी पेटसे भोजन प्राप्त कर सुदृढ़ बन जाते हैं, ऐसे ही वृक्षके जड़में खाद पानी डालने पर पत्ते, शाखायें एवं फूल तथा फलोंमें स्वत: ही रस पहुँच जाता है उनके लिए पृथक् पृथक् खाद पानीकी आवश्यकता नहीं है ठीक इसी तरह परब्रह्म परमात्मा श्री कृष्णकी अनन्य उपासना करने पर मनुष्यको सब प्रकारकी शक्ति प्राप्त होती है। अलग अलग कामनाओंकी सिद्धिके लिए उन उन देवी देवताओंकी ही उपासना

करनी पड़ती हो ऐसी बात भी नहीं है, वे सब श्री कृष्णकी शक्तिके अन्तर्गत आ जाते हैं। श्री कृष्ण अपने भक्तोंको या तो स्वयं सब प्रकारकी वस्तुएँ दे देते हैं या उन देवोंसे दिला देते हैं। वे सर्व शक्ति सम्पन्न हैं। अतः उनकी उपासनासे ही सभी देव प्रसन्न हो जाते हैं और मनोवाञ्छित फल स्वयं दे देते हैं। सामान्य व्यवहारमें भी यह बात कुछ मात्रामें लागु होती है। जिस किसी व्यक्तिका सीधा सम्बन्ध राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री आदि प्रमुख व्यक्तिसे हो तो उसे सामान्य अधिकारी नौकर आदिसे पृथक् पृथक् सम्बन्ध जोड़नेकी आवश्यकता नहीं होगी। उसके सम्पूर्ण कार्य सहज ही सिद्ध हो जायेंगे। यही बात उपासना पक्षमें भी है।

अभी हमें यह मालूम हो गया कि श्री कृष्ण परमतत्त्व हैं एवम् उनकी अनन्य उपासनासे हमारी सम्पूर्ण लौकिक आवश्यकताओंकी भी पूर्ति हो जाती है तथा हमारी आत्माको जन्म मरणके चक्रसे छुटकारा प्राप्त होकर शाश्वत शान्ति भी मिल सकती है। अब हम श्री कृष्णके सम्बन्धमें पुराणोंका पर्यालोचन करें।

ब्रह्मवैवर्त पुराणके ब्रह्मखण्डके प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय अध्यायमें ऐसा वर्णन आता है कि भारत वर्षके प्राचीन तीर्थ नैमिषारण्य क्षेत्र, जो ऋषि मुनियोंके आध्यात्मिक अनुष्ठानका केन्द्र भी माना जाता था, में एक बार ऋषियोंकी सभा हो रही थी। उस समय शौनकादि हजारों ऋषियोंके समुदायमें सौति नामके ख्याति प्राप्त तत्त्ववेत्ता ऋषिका पदार्पण हुआ और शौनककी जिज्ञासा पर उन्होंने श्री कृष्णके धाम गोलोक धामका वर्णन किया जो इस ब्रह्माण्डसे परे और अखण्ड है।

सृष्टिसे पूर्व समग्र विश्व शून्यमय था। पाँच तत्त्व आदि कुछ भी नहीं थे। सब जगह अन्धकार ही अन्धकार प्रतीत होता था। तब सर्व प्रथम श्री कृष्णकी प्रेरणासे मूर्तिमान तीन गुण, पाँच तत्त्व, पञ्च तन्मात्रायें, पाँच विषय आदिके साथ साथ साक्षात् भगवान नारायणका प्रादुर्भाव हुआ। नारायणने प्रकट होकर श्री कृष्णकी स्तुति की एवं प्रणाम किया। भक्ति विभोर नारायण श्री कृष्णकी आज्ञासे उनके ही सामने रमणीय रत्नमय

सिंहासनपर विराजमान हुए । तत्पश्चात् भगवान शंकर प्रकट हुए जिनकी अंग कान्ति शुद्ध स्फटिकमणिके समान उज्जवल थी । उन्होंने श्री कृष्णके सन्मुख खड़े होकर उनकी स्तुति की और प्रणाम किया । तदन्तर श्री कृष्णने देवी सिंहवानीको ग्रहण करनेके लिए कहा । उस समय भगवान शंकर श्री कृष्णसे प्रार्थना करते हैं,

‘‘नाथ ! मुझे गृहिणी नहीं अपितु वह श्रेष्ठ वर दीजिए जिससे आपकी ही चरण सेवा करता हुआ नित्य निरन्तर आपकी भक्तिमें लगा रहूँ । आपके चरण कमलोंकी सेवासे मैं कभी भी तृप्त नहीं होता । सोते, जागते, चलते, फिरते आपके नाम और गुणोंका स्मरण करतां रहूँ । मेरा मन भोगोंकी इच्छामें नहीं, आपके स्वरूपके ध्यान, मननमें लगता रहे । अतः आपके नाम और गुणोंका स्मरण कीर्तन, श्रवण जप आपके मनोहर रूपका ध्यान आपके चरण कमलोंकी सेवा वन्दना आपके प्रति आत्म समर्पण और नित्य आपके नैवेद्य(प्रसाद)का भोजन प्राप्त कर सकूं ऐसा वरदान दीजिए । मेरी यही चाहना है ।

प्रभो ! सार्ष्टि, सालोक्य, सारूप्य, सामीप्य, साम्य और लीनता आदि मुक्तियाँ मानी गई है । अणिमाँ, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति प्राकम्य, वसित्व, ईषित्व, सर्वकामावसायिता, सर्वज्ञता, दूरश्रवण, परकायप्रवेश वाक्‌सिद्धि, कल्पवृक्षत्व, सृष्टि शक्ति, संहार शक्ति, अमरत्व और सर्वाग्रता नामकी अठारह प्रकारकी सिद्धियां बतलाई गई हैं । इसी तरह योग, तप, दान, उपवास, कल्पवास, तीर्थ भ्रमण, तीर्थ स्नान, पृथ्वी परिक्रमा आदि जो भी वांछनीय पद हैं वे सबके सब आपकी भक्तिकी सोलहवीं कलाके भी बराबर नहीं हैं ।’’ आदि आदि । इसी तरह अन्य देवताओंकी उत्पत्तिका भी वहाँ वर्णन आता है ।

इससे यह सिद्ध होता है कि सृष्टिके आदिमें श्री कृष्ण ही थे ।

ऐसा ही उल्लेख अग्नि पुराणके अन्तर्गत गर्ग संहितामें आता है । कंस आदि राक्षसोंके भारसे पीड़ित पृथ्वी गौका रूप धारण कर ब्रह्माजीके पास चली गई और कहने लगी प्रभो ! राक्षस क्रूर कर्मोंसे मुझे बड़ा

आघात पहुँचाते हैं कृपया इस कष्टका निवारण कीजिए। ब्रह्माजी भगवान विष्णुके पास चले गए और पृथ्वीका कष्ट सुनाया। उस समय भगवान् विष्णुने कहा,

'इस समय तुम्हारे कष्टको दूर करनेमें मैं असमर्थ हूं। गोलोकवासी श्री कृष्ण ही कंसके अत्याचारका निवारण कर तुम्हारा भार हल्का करेंगे क्योंकि कंस गोलोक धाममें रहनेवाला श्रीदामा नामका द्वारपाल है। तब पृथ्वी कहने लगी, भगवन्! मैं आपके अतिरिक्त किसी ऊंची शक्तिको नहीं जानती अतः आप ही श्री कृष्णसे मेरी प्रार्थना कर दीजिए।'

अब तीनों देवता अपना सूक्ष्म रूप बना कर इस ब्रह्माण्डसे पार गोलोक धाम पहुँचे वहाँ द्वारपालके रूपमें सखियाँ थी। उन्होंने पूछा आप कौन हो? विष्णु कहने लगे हम तीनों देवता ब्रह्माण्डके अधिपति ब्रह्मा, विष्णु, महेश कहलाते हैं। सखियोंने कहा, ब्रह्माण्ड तो असंख्य हैं। प्रत्येक ब्रह्माण्डमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों देवता हैं अतः वे भी असंख्य हैं। अब आप बताओ कौनसे ब्रह्माण्डके अधिपति हो? तीनों देवता अवाक् रह गए। कुछ देर बाद भगवान विष्णु कहने लगे जिस ब्रह्माण्डमें नृसिंह, वामन, परशुराम, राम आदि अवतार हुये हैं हम उसी ब्रह्माण्डके रहनेवाले हैं। फिर सखियोंने कहा, ये तो भगवान विष्णुके अवतार हैं, जो सभी ब्रह्माण्डोंमें होते रहते हैं। कुछ देर विचार कर तीनोंने कहा, यहाँका द्वारपाल श्रीदामा जिस ब्रह्माण्डमें गया है हम उसी ब्रह्माण्डसे आए हैं।

तब अन्दर जानेकी आज्ञा मिली। भीतर गोलोकवासी राधिका पति श्री कृष्णके दर्शन हुये और उनसे देवताओंने प्रार्थना की। उनकी प्रार्थना सुनकर श्री कृष्ण बोले, देवताओ घबड़ानेकी कोई बात नहीं है। हम उसे लेनेके लिए द्वापरके अन्तमें आयेंगे। तब तक प्रतीक्षा करो। तीनों उनको प्रणाम कर लौट आए।

पुराण संहिताके २६ वें अध्यायमें वर्णन आता है, जब देवता चले आए तब राधाजी श्री कृष्णसे विनती करने लगी, नाथ! आपके साथ मैं भी चलूंगी। श्री कृष्ण कहते हैं, राधे! कभी भी हमारा वियोग नहीं होता

है। तुम भी अवश्य चलोगी। तुम्हारे साथ साथ गोलोक धामकी सखियां भी चलेंगी। हम सब मृत्युलोकके व्रज मण्डलमें उतरेंगे। इस तरह गोलोक धामका समस्त ऐश्वर्य व्रज भूमिमें प्रगट होगा। परमधाममें अपने जो मूल स्वरूप श्री राजश्यामाजी हैं उनका भी आवेश हमारे और तुम्हारे अन्दर आएगा और उन अक्षरातीत श्री राजजीकी प्रियाओं(ब्रह्मात्माओं)का आवेश भी गोपिकाओंमें उतरेगा। इस प्रकार इस बार पूर्णब्रह्म परमात्मा भी अपनी आत्माओं सहित प्रकट होंगे।

सज्जनो ! इन शास्त्र वचनोंसे स्पष्ट होता है कि श्री कृष्ण भगवान विष्णुके अवतार नहीं है, वे तो परब्रह्म परमात्माके साक्षात् स्वरूप हैं। प्रसंगवश उनका इस भूतल पर आना हुआ। अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्माको भी शास्त्रोंने श्री कृष्ण नामसे पुकारा है और इस ब्रह्माण्डसे परे गोलोक धामके अधिपतको भी श्री कृष्ण नामसे पुकारा है। पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री कृष्णजी एवं गोलोकी नाथ श्री कृष्णजी दोनोंकी शक्ति पृथ्वी पर उतरी उसीमें भगवान विष्णु भी शामिल हुये। अतः इन तीनों स्वरूपोंके रहस्यको न जानकर लोगोंमें यह भ्रामक धारणा फैली है कि श्री कृष्ण भगवान विष्णुके अवतार हैं। जब श्री कृष्ण भूतल पर आए उस समय शरीर गोलोक धामका था, आत्मा अक्षर और उसमें आवेश शक्ति अक्षरातीतकी परमधामसे आई थी। इसीलिए गर्ग संहितामें स्पष्ट कहा है कि कंस आदिके हननके समय श्री कृष्णमें अलौकिक शक्ति थी। वे नन्द पुत्र नहीं अपितु वासुदेव अंश हैं। क्योंकि पूर्णब्रह्म साक्षात् अक्षरातीत श्री कृष्णने तो व्रजमें ही अपने पूर्ण अंशसे विहार किया। मथुरा और द्वारिकामें उनके छोटेसे अंशने जाकर अन्य लीलायें की हैं।

अतः यह बात स्पष्ट होती है कि श्री कृष्ण साक्षात् परब्रह्म परमात्माके स्वरूप हैं वे पृथ्वी पर इसीलिए प्रकट हुये कि उनकी शक्तियोंके अंश भी अवतरित होकर अपने अपने कार्य करें और संसारको पूर्ण स्वरूपका भी ज्ञान हो। व्रजमण्डलमें अवतरणसे पूर्व उनका परमधाममें और गोलोक धाममें अपना पृथक पृथक् स्वरूप है परम धाममें अपनी ब्रह्म आत्माओंके साथ उनकी लीला होती रहती है।

वीतक यात्रा

स्वामी लक्ष्मण चैतन्य-श्री ५ नवतनपुरी धाम

नन्दबाबाकी मथुरा यात्रा :

नन्दमहोत्सव पश्चात् गोकुलकी रेखदेख बड़े बुजुर्ग एवं गोकुलके आगेवान ग्वालोंको सौंपकर नन्दबाबा कर भरनेके लिए मथुरा गये। महाराज कंस समक्ष सुसज्जित सौगात रखते हुए नन्द बाबाने कहा, महाराज ! भगवानकी दयासे मेरे घर पुत्र हुआ है, आपसे आशीर्वाद लेने आया हूँ। स्वर्णस्थालीमें सुसज्जित अनेक प्रकारके रत्नों एवं नन्दबाबाकी विनम्रता देखकर कंस बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने अपना स्वभाव प्रतिकूल होकर बड़े साधु-सज्जनकी तरह नवजात शिशुको आशीर्वाद दिया, तुम्हारा पुत्र दीर्घायुको प्राप्त हो, उसके यश एवं कीर्ति चारों ओर फैले, उसके शत्रुका विनाश हो, वह बल, विद्या एवं बुद्धिमें सबसे विशिष्ट बने आदि आदि। इस प्रसंगका तात्पर्य बताते हुए ज्ञानी जन कहते हैं, बुद्धिमान मनुष्यको चाहिए कि सुखद् प्रसंगमें अपने हितैषीके साथ-साथ अपने ऊपर शत्रुबुद्धि रखनेवालोंको भी नहीं भूलना चाहिए। कंस यह नहीं जानता है कि जिसको वह आशीर्वाद दे रहा है वही उसका काल है।

इसप्रकार वार्षिक कर चुकानेके पश्चात् नन्दबाबा अपने आवास पर गये। यहाँपर वसुदेवजीको पता चला कि मेरे मित्र करदान हेतु मथुरा आये हुए हैं वे अविलम्ब बाबा नन्दसे मिलने पहुँच गये। वसुदेवजीके आगमनसे नन्दबाबा भी बड़े प्रसन्न हुए दोनोंको अपार आनन्द मिला। कुशल समाचार जाननेके बाद दोनों एक दूसरेके ऊपर आये सुख-दुःखकी चर्चा करने लगे। नन्दबाबा वसुदेवजीके ऊपर आई कष्ट कठिनायोंसे स्वयंको दुःखी मानते हैं। वसुदेवजी नन्दजीके घर पुत्र प्राप्तिकी प्रसन्नतासे पुलकित होते हैं। न वसुदेव अपने ऊपर टूटा दुःखका पहाड़ प्रकट करते हैं न ही नन्दबाबा पुत्रोत्पन्न प्रसंगसे पुलकित होते हैं। इस प्रकार दोनों मित्र एक दुसरेके सुख-दुःखमें अपने आपको डूबो लेते हैं।

वसुदेवजी कहते हैं, मित्र ! कहते हैं न भगवानके घर देर है पर अन्धेर नहीं, देरीसे ही सही तुम्हारे घर सन्तान हुई । अब तो कोई किसी बातकी कमी नहीं रही । मित्र मेरा पुत्र भी अपनी मा रोहिणीके साथ तुम्हारे साथ ही रहता है अब तो उसे भी अपना भाई मिल गया है, चलो अच्छा हुआ । नन्दबाबा भी कहते हैं मित्र, देवकीके गर्भसे उत्पन्न तुम्हारे छः पुत्रोंको क्रूर कंसने मार डाला एवं अन्तमें एक पुत्री हुई थी वह कंसके हाथसे छुटकर ऊपर स्वर्ग चली गई । वसुदेवजी ! यूं तो,

नूनं ह्यदृष्टनिष्ठोऽयमदृष्टपरमो जनः ।
अदृष्टमात्मनस्तत्त्वं यो वेद न स मुह्यति ॥

- भा.१०/५/३०

अर्थात् इसमें सन्देह नहीं है कि प्राणियोंका सुख-दुःख सभी भाग्य पर ही अवलम्बित है । भाग्य ही प्राणियोंका एकमात्र आश्रय है । जो इस रहस्यको जान लेता है वह किसी भी परिस्थितिसे मोहित नहीं होता । वसुदेव तुम तो ज्ञानी हो अतः इन सारी घटना तुम्हें कदापि विचलित नहीं कर सकती । ऐसी घटनासे तो हमारे जैसे अज्ञानी ही दुःखी होते हैं । विविध चर्चा परिचर्चा पश्चात् वसुदेवजीने नन्दबाबासे कहा, मित्र ! देखो वर्षों बाद हमारा मिलना हुआ है । वैसे भी **'उपलब्धो भवानद्य दुर्लभं प्रियदर्शनम्'** आजकल अपने प्रेमियोंका मिलना भी बड़ा दुर्लभ हो गया है, ऐसेमें मुझे आप जैसे परम मित्र मिले हैं । परन्तु हे मित्र ! चाह कर भी हम एक दूसरे साथमें नहीं रह सकते । कहते हैं न,

नैकत्र प्रियसंवासः सुहृदा चित्रकर्मणाम् ।
ओघेन व्यूह्यमानानां प्लवानां स्त्रोतसो यथा ॥

-श्रीमद्‌भागवत् १०/५/२५

अर्थात् जैसे नदीके प्रबल प्रवाहमें बहते हुए बेडे और तिनके सदा एक साथ नहीं रह सकते, वैसे ही सगे सम्बन्धी और प्रेमियोंका भी एक स्थान पर रहना सम्भव नहीं है । प्रियजनोंकी इच्छा एक साथ रहनेकी होती है उनका प्रारब्ध कर्मानुरूप उनको अलग-अलग होना पड़ता है । मित्र मुझे भी

तुम्हारे साथ बैठकर खट्टी-मिट्ठी बातें करनेकी तमन्ना है किन्तु पता नहीं क्यों मुझे चारों ओर आशंका, अनिष्ट एवं अपशुकन नजर आ रहे हैं। वसुदेवजी जानते थे कि दरबारमें कंस क्या चाल चल रहा है। उन्हें पता था कि निशाचरी पूतना बाल वधके लिए व्रज-गोकुल जानेवाली है। कंसका यह आयोजन नन्दबाबासे सहा नहीं जायेगा इसीलिये वसुदेवजीने नन्दबाबासे स्पष्ट बात नहीं की। वसुदेवजीकहते हैं परमात्मा न करें गोकुलमें कोई आपत्तीजनक घटना घटे। इसीलिए हे मित्र ! आप यहाँसे शीघ्राति-शीघ्र गोकुलके लिए प्रस्थान करो इसीमें हम सबकी भलाई है। इस प्रकार वसुदेवजीजीसे मिलकर नन्दबाबा मथुरासे गोकुलकी ओर प्रस्थान करते हैं।

पूतना उद्धार :

कंशेन प्रहिता घोरा पूतना बालघातिनी ।
शिशुंश्चकार निघ्नन्ति पुरग्रामव्रजादिशु ॥

-श्रीमद्भागवत १०/६/२

पूतना बालकोंकी हत्या करनेवाली क्रूर राक्षसी थी। कंसकी आज्ञासे ही वह नगर, गाव, गलि एवं ग्वालोंके निवासस्थान पर बालकोंको मारनेके लिए विचरण करती थी।

अज्ञान एवं अपवित्रताकी प्रतीक पूतना श्री कृष्ण प्राकट्यके छः दिन पश्चात् अर्थात् चतुर्दशीके दिन गोकुल पहुँच जाती है। पूतनाका अर्थ करते हुए ज्ञानीजन कहते हैं, पूत अर्थात् पवित्र, ना अर्थात् नहीं जो पवित्र नहीं है वही पूतना। पूतना अज्ञान स्वरूप है, वही सर्वाधिक अपवित्र है। जिनके होठ पर मोहक स्मित और हृदय विषाक्त हो वही पूतना है। मुखमें राम और बगलमें छूरा वही पूतना है। जिसका स्वरूप तो सुन्दर हो और स्वभाव कुरूप-वही पूतना है। जिसकी कहनी और करनीमें अन्तर है वही पूतना। गीतामें श्रीकृष्ण कहते हैं,

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते। ४/३८

इस दुनियामें ज्ञान जैसी पवित्र वस्तु कुछ भी नहीं है। ज्ञान भी दैहिक नहीं अपितु आत्मिक। जिसे आत्मज्ञान कहते हैं। अज्ञान जैसा अपवित्र एवं

आत्मज्ञान जैसा पावन दूसरा कुछ नहीं है । पूतना स्वयं अज्ञानस्वरूप है । चतुर्दशीके दिन पूतनाका आना भी एक रहस्य है । ज्ञानीजन कहते हैं जो अक्षरातीत परब्रह्म परमात्मा श्रीकृष्णका ध्यान, भजन, कीर्तन एवं स्मरण जो नहीं करता उसके पंच कर्मेन्द्रि, पंच ज्ञानेन्द्रिय एवं चार अन्तःकरणमें अविद्यारूपी पूतनाका आगमन होता है । श्रीकृष्ण साक्षात् ज्ञान, प्रेम एवं प्रकाश स्वरूप हैं । श्रीकृष्णके स्वरूप एवं स्वभावजन्य ज्ञानका अभाव होना ही पूतना है ।

गोकुलमें पूतनाने सुंदर एवं आकर्षक देह धारण किया । सुन्दर–सुन्दर वस्त्रालंकार परिधान कर हाथमें कमलपुष्प नचाती हुई पूतना अपना वह छल एवं छद्मपूर्ण स्वरूप एवं सौन्दर्यसे सभीको आकर्षित करने लगी । गोकुलकी गलियोंमें ऐसी सुन्दर स्त्रीको विचरण करती हुई पहलीबार देखकर गोपियोंको लगा कि ओहो ! आज हमारे गोकुलमें साक्षात् लक्ष्मीका तो आगमन नहीं हुआ है ? मनुष्य जीवनमें अज्ञान एवं अविद्या रूप बदलकर ही आते हैं। कब और कैसे मनुष्यके मन मस्तिष्कमें अज्ञानान्धकार प्रवेश करता हैं पता नहीं चलता । अतः मनुष्यको चाहिए कि निरन्तर आत्मचिन्तनमें लगे रहे ताकि अज्ञानान्धकारसे विमुक्त रहे। पूर्व सुनियोजित कार्य अर्थात् बालवध मैं कहांसे आरंभ करूं, इसप्रकार पूतना सोच ही रही थी वहाँ नन्दभवनमें विराजमान अखिल ब्रह्माण्ड नायक परब्रह्म परमात्मा श्रीकृष्णने सोचा,

न यत्र श्रवणादीनि रक्षोघ्नानि स्वकर्मसु ।
कुर्वन्ति सात्वतां भर्तुर्यातुधान्यश्च तत्र हि ॥

–श्रीमद्भागवत १०/६/३

अर्थात् जो लोग अशुभ, अज्ञान एवं अन्धकारको दूर कर ज्ञान, प्रेम एवं प्रकाश प्रदान करने वाले परमात्माका भजन, कीर्तन एवं स्मरण नहीं करते वहीं पर पूतना जैसी राक्षसीका प्रभाव पड़ता है। यहाँ गोकुलकी समग्र प्रजा तो मुझे ही अपना सर्वस्व मानती है फिर यहाँ पर पूतना कैसे अपना प्रभाव डाल सकेगी ? अतः उसे मैं सीधे मेरे पास ही बुला लेता हूँ। ऐसा

विचार कर सचराचर जगतको अपनी ओर आकृष्ट करनेवाले श्रीकृष्णने पूतनाको सीधे अपने पास ही बुला लिया । कहते हैं श्रीकृष्णका प्राकट्य हो गया तबसे लेकर जब तक वे गोकुलमें रहे तब तक वहाँपर कभी किसी भी प्रकारका अनिष्ट नहीं हुआ अर्थात् गोकुलनिवासी आधि, व्याधि एवं उपाधिसे मुक्त रहे ।

पूतना यशोदाको वधाई देते हुए नन्दभवनमें प्रवेश करती है । उसे देखकर क्षणभर तो यशोदाकी आँखें भी चौंधियाँ गई । यशोदा सोचने लगी साक्षात् लक्ष्मीकी तरह सौन्दर्य साम्राज्ञी यह है कौन ? यशोदाने संशयपूर्वक पूतनाको देखा...पूतना बोली अरी बहन ! सम्भवतः तुमने मुझे नहीं पहचाना । समझलो मैं तुम्हारी ही बहन हूँ । बहन ! यशोदा सोचने लगी, मेरी तो कोई ऐसी बहन नहीं है । यह नयी–नवेली बहन कहाँसे आई ? फिर मनमें सोचा कन्हैयाके प्राकट्यसे ही प्रतिदिन नयें नयें लोगोंका आना जाना चलता रहा है कोई परिचित तो कोई अपरिचित ।

संसारका नियम भी है सुखके क्षणमें ही लोग अपनत्त्व दिखाते हैं, सम्बन्ध जोड़ते हैं किन्तु दुःखीके पास सम्बन्ध जोड़ने कौन जाता है ? विना एक श्रीकृष्णके......इस प्रकार यशोदा मन ही मन विचार कर ही रही थी पूतनाने कहा, बहन क्या मैं लालाको अपनी गोदीमें ले सकती हूँ । यशोदाने कहा हाँ हाँ ले लो । मैंयाने सोचा मैं भी घर काम थोड़ा करलूं । कन्हैया पलनेमें बैठे बैठे विचार कर रहे हैं अरे मेरी भोली मैंया, यह अच्छी बात नहीं है । तुम इसको नहीं जानती, यह बाहरसे जितनी सुन्दर है अन्दरसे उतनी ही क्रूर है । करुणा सखी कहती है,

कान्हे पूतना आवत जानी, नेने मूंदके निद्रा आनी ।
बंकी पूतना पासे आई, लीने उछंगे कुंवर कनाई ॥

रज्जु जान सर्प ले जैसे, बालक जान कृष्ण लिए तैसे ।
मुत्युको मृत्यु कालको काल, ऐसो ना जान्यो यह नन्दलाल ॥

–श्री तारतम सागर वीतक

जैसे अबुध बालक सर्पको रज्जु समझकर पकड़ लेता है वैसे ही

पूतना कन्हैयाको एक साधारण बालक समझकर पलनासे उठाती है । किन्तु पूतना नहीं जानती है कि वह जिसे मृत्युके मुखमें धकेलने आई है वह कालके भी काल हैं उनका कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता । अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड्के रचयिता अक्षरब्रह्म भी जिनकी सद्आज्ञासे कार्य किया करते हैं वैसे परब्रह्म परमात्माको पूतना कैसे मार सकती है ? पूतनाको अपने सन्निकट आते हुए जानकर कन्हैया अपनी उद्घाटित कमललोचन बन्द कर देते हैं । कन्हैयाने अपनी नयन पूतनाको क्षणमात्र भी प्रदान नहीं किया, इस विषयमें ज्ञानी, संत-महापुरुष अनेक कारण बताते हैं कि आखिर कन्हैयाने पूतनाको दृष्टि क्यों नहीं दी ? तो देखें श्रीमद्भागवत्के उल्लेखित संत महापुरुषोंकी उत्प्रेक्षाएँ,

श्रीमद्वल्लभाचार्यजीने सुबोधिनीमें कहा है, अविद्या ही पूतना है । श्रीकृष्णजीने सोचा कि मेरी दृष्टिके सामने अविद्या टिक नहीं सकती, फिर लीला कैसे होगी, इसलिए नेत्र बन्द लिये ।

यह पूतना बाल घातिनी है 'पूतानपि नयति' यह पवित्र बालकोंको भी ले जाती है । ऐसा जघन्य कृत्य करनेवालीका मुंह नहीं देखना चाहिए, इसलिए नेत्र बंद कर लिए ।

कोई कहते हैं इस जन्ममें तो इसकी ऐसी कोई साधना नहीं है, संभवतः मुझसे मिलनेके लिए पूर्व जन्ममें ही कुछ किया हो इस प्रकार पूतनाके पूर्व जन्मोंकी साधनाको देखनेके लिए ही कन्हैयाने नेत्र बन्द किया है ।

श्रीकृष्णके अन्दर चराचर जगत् एवं समग्र ब्रह्माण्ड समाया हुआ है । जैसे ही पूतना श्री कृष्णको विषपान करानेके लिए तैयार हुई तो वे सभी चराचर प्राणी हाहाकार करने लगे, तब श्रीकृष्णने सभीको सान्त्वना देने हेतु अपनी नेत्र बन्द कर लिये ।

श्रीकृष्णने सोचा कि मैं तो अभी छः दिनका ही हुआ हूँ, यहाँ तो मैं माखन मिश्री खाने आया हूँ, प्रेम पान करने व कराने आया हूँ । ऐसी परिस्थितिमें मुझे विषपान करनेकी नोबत आयी ? चलो, यह भी स्वीकार्य है । ऐसा सोच कर पूतनाके कार्यमें विघ्न उपस्थिल होने न देनेके लिए श्री कृष्णजीने शान्त चित्तसे अपनी आँखें बन्द की ।

कन्हैयाने सोचा कि पूतना आई तो है दुर्भावना लेकर किन्तु कुछ भी हो मैं क्षण भरके लिए ही सही इसका दूग्ध पान करने जा रहा हूँ। जिसका दूध पिया वह मा समान होती है। माँको तो सद्‌गति देनी पड़ेगी। इसको कौनसी गति प्रदान करूं यह विचार करनेके लिए ही कन्हैयाने नेत्र बन्द कर लिये हैं।

श्रीकृष्णके नेत्रकमलने सोचा कि पूतनाके नेत्र भी हैं तो हमारे ही कुलके किन्तु उसने अपने कुलका नाम बदनाम किया है अतः अपने कुलके होते हुए भी वे तिरस्कारके पात्र हैं। इसलिए कन्हैयाके नेत्रोंने अपने ऊपर पलकोंका परदा डाल दिया।

श्रीकृष्णने सोचा कि इसे करूणा-दृष्टिसे देखूँगा तो मारूँगा कैसे, और उग्र दृष्टिसे देखूँगा तो यह अभी भस्म हो जायेगी अतः लीला सिद्धिके लिए नेत्र बन्द कर लेना ही उचित है ऐसा सोचकर नेत्र बन्द कर लिए।

श्रीकृष्णने सोचा कि जो बाहरसे सोलह श्रृंगारसे युक्त बने और अन्दरसे उतना ही कलुषित भावनासे ग्रस्त हो ऐसे लोगोंका मूंह भी नहीं देखना चाहिए। इसीलिए नेत्र बन्द कर लिए।

श्रीकृष्णने सोचा कि गोकुलमें रहूँगा तब तक किसीको मारनेका काम मैं नहीं करूँगा। किन्तु अभी छः दिनमें ही पूतनाको मारना पड़ रहा है, तो क्या करूं ? उन्होंने अपने अन्दर विद्यमान अनन्त शक्तिमेंसे किसी एकको याद कर उसे बुलाया ताकी वह उसका कार्य कर सके।

शास्त्रमें विधान है, माता-पिता, साधु-सज्जन, बालक एवं स्त्रीका वध कभी नहीं करना चाहिए। एक तो यह स्त्री है, दूसरी किञ्चित मात्र भी सही यह मांका काम करने जा रही है, और सोलह श्रृंगारसे युक्त हैं ऐसेमें इसका वध नहीं हो पायेगा अतः इसे देखे विना ही काम तमाम करना चाहिए यह सोचकर कन्हैयाने नेत्र बन्द कर लिए।

श्रीकृष्णने सोचा कि मेरे आश्रयी लोगोंको दुःख, कष्ट देने वालोंको मैं कभी क्षमा नहीं करता किन्तु उन्हें कष्ट देनेकी दुर्बुद्धि भी जो रखता है उसे भी मैं देखना पसन्द नहीं करता। यह सोचकर उन्होंने आखें बन्द कर ली। इस प्रकार अनेकानेक संत महापुरुष अपने अपने अभिप्राय व्यक्त करते हैं। कुछ

भी हो श्रीकृष्णजीने पूतनाको दृष्टि नहीं दी । इस प्रसंगसे ज्ञात होता है कि दुर्भावनासे ग्रस्त लोगोंके साथ आँखें नहीं मिलानी चाहिए ।

क्षणभरमें ही पूतनाने अपने विषाक्त स्तनको कन्हैयाके मुंहमें दे दिया । कन्हैयाने उसके पयके साथ–साथ प्राण भी खींचना प्रारम्भ किया। थोड़ी देर तो पूतना प्रसन्न हो रही थी कि अब कुछ ही देरमें इसका काम तमाम हो जायेगा किन्तु क्या था पूतनाको सहसा असह्य वेदना होने लगी । वह छटपटाकर '**सा मुञ्च मुञ्चालमिति प्रभाषिणी**' छोड़ दो, छोड़ दो, मुझे इस असह्य पीडासे मुक्त कर दो । इस प्रकार पूतना चिल्लाने व कहराने लगी । श्रीकृष्ण मन ही मन कहते हैं पूतना तुम नहीं जानती मैं जिसको एकबार पकड़ लेता हूँ उसे कभी नहीं छोड़ता। मेरी प्रतिज्ञा भी है कि कोई भी मेरे चरण शरणमें पहुँच जाता है उसे मैं कभी तिरस्कार नहीं करता। अतः तुमने अनेक जन्मोंके बाद मेरा शरण प्राप्त किया है अतः तुम्हें मैं कैसे छोड़ सकता हूँ। एक अर्थमें पूतनाकी बात कन्हैयाको सही भी लगी। कहते हैं पूतना तुम सही कहती हो, तुम्हें इस निशाचर योनिमें बहुत पीड़ा हो रही है। अतः मैं सचमुच तुम्हें इस योनिसे मुक्त कर देता हूँ। अर्थात् '**अहं त्वा सर्वपापेभ्यो: मोक्षयिष्यामि मा शूच**' तुम्हें मैं सम्पूर्ण पापोसें मुक्त कर मोक्ष प्रदान करता हूँ।

पूतनाका छल–छद्मयुक्त स्वरूप बदल गया, वह असली रूपमें आ गई । दुष्ट लोगोंका रूप, रंग बदलते देर नहीं लगती । । इसीलिए ज्ञानीजन कहते हैं लोगोंकी वास्तविक पहिचान विपत्तिके समयमें ही होती है। पूतनाने अपना वास्तविक रूप प्रकट किया और कन्हैयाको लेकर हाथ पैर पटकते हुए वह बाहर आँगनमें पहुँच गई। थोड़ी दूर तक पहुँची तो कन्हैयाने सोचा अब इससे दूर मैं नहीं जाऊंगा, तुम्हारा कल्याण इसी स्थान पर होगा । कन्हैयाने वहीं पर उसके प्राण पखेरूं उड़ा कर मोक्ष गति प्रदान की ।

श्रीकृष्णको प्रेमसे किया गया स्मरण एवं प्रणाम अनन्त अश्वमेध यज्ञसे भी बढ़कर फल देता है । यहाँ तो पूतनाने अज्ञानमें ही सही कृष्ण स्मरण एवं स्पर्श किया। ऐसी घड़ीमें यदि उसका मोक्ष हो तो इसमें आश्चर्य ही क्या है ? कहते हैं,

पूतना लोकबालघ्नी राक्षसी रुधिराशना ।
जिघांसयापि हरये स्तनं दत्त्वाऽऽप सद्गतिम् ॥

किं पुनः श्रद्धया भक्त्या कृष्णाय परमात्मने ।
यच्छन् प्रियतमं किं नु रक्तास्तन्मातरो यथा ॥

श्रीमद्भागवत १०/६/३५,३६

अर्थात् निर्मल एवं अबोध बालकोंको मारनेवाली, शिशुका रक्त पिनेवाली ऐसी अपवित्र निशाचारी राक्षसी पूतना कन्हैयाको मारनेकी अभिलाषासे ही आयी हुई थी । यह सब जानते हुए भी कन्हैयाने उसे सद्गति प्रदान की । तो जो ऐसे करुणासिन्धु, कृपासागर, परब्रह्म परमात्मा अक्षरातीत श्रीकृष्णको यदि श्रद्धा, भक्ति एवं भाव पूर्वक वास्तविक यशोदाकी तरह वात्सल्य, गोपोंकी तरह सखा एवं गोपियोंकी तरह पिया भावसे ओतप्रोत होकर अपने आपको उनके चरणमें समर्पण करतें हैं उनका तो कहना ही क्या ?

मैया यशोदाने कन्हैयाको पलनेमें नहीं देखा तो जैसे नव प्रसूता गाय अपने बछड़ेको न देखकर रंभाती है वैसे ही विलाप करती हुई आंगनमें आई । गोपियोंको भी पता चला कि कन्हैया खो गयें हैं । गोकुलमें हाहाकार मच गया, क्षण भरके लिए तो सभीके प्राण पखेरु उड़ गये । इतनेमें किसी गोपीने देखा कि कन्हैया पहाड़की तरह भयंकर राक्षसी पूतनाकी छाती पर क्रीड़ामग्न हैं । गोपियोंने शीघ्र वहाँ जाकर कन्हैयाको पूतनाकी छातीसे उठाकर अपने छातीपर लगा लिया एवं अनेक प्रकारके मन्त्रोच्चार कर कन्हैयाकी रक्षाके लिए अपने-अपने इष्टसे प्रार्थना की । यशोदाने कन्हैयाको गोदमें लियार । बार बार मस्तक सूंघकर भगवानको धन्यवाद कहा । इतनेमें नन्दबाबा भी गोकुल पहुँच गये । कन्हैयाको सकुशल देखकर नन्दबाबा भी प्रसन्न हो गये ।

गोप गोपियोंने पूतनाका अग्निसंस्कार किया । कहते हैं जलता हुआ उसके शरीरसे निकली धूआँकी सुगन्ध मलयागिरीके चंदनकी तरह थी । ज्ञानी जन कहते हैं, एक चन्दनवृक्ष उस वनमें विद्यमान अन्य लता वृक्षको भी सुगन्धित कर देता है तो मनमोहनके स्पर्शसे पूतनाका तन भी चन्दनसदृश बने इसमें आश्चर्य ही क्या है ?अस्तु

क्रमश....

महामतिकी दार्शनिक अवधारणा

डॉ. शकुन्तला गुप्ता, एम. ए. पी एच. डी.
प्रयाग विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

महामति प्राणनाथ औपचारिक रूपसे किसी विशेष दार्शनिक पद्धतिको लेकर नहीं चले । उनके दर्शनमें संसारके सभी दर्शन, धर्म पद्धतियोंका समावेश एवं स्पष्टीकरण हुआ है । सर्व धर्म, जाति, समाज एवं भाषाके समभावका संदेश देनेवाली उनकी जागनी लीला ही उनके समभावी दर्शनका प्रत्यक्षस्वरूप है ।

महामति प्राणनाथका आयाम जितना व्यापक है उतना ही गम्भीर है। इसके लिये तारतम सागरमें सग्रहित सत्रह ग्रन्थोंका विश्लेषण आवश्यक है । सब ग्रन्थोंमें गूँथी दार्शनिक विचारधाराके अनुसार उनका कथन है ।

यह सृष्टि अक्षरातीत ब्रह्मकी आज्ञासे अक्षर ब्रह्मकी कल्पनाद्वारा बनी है। पूर्णब्रह्म परमात्माकी अविनाशी सता अक्षर ब्रह्म है और यह सृष्टि क्षर है। क्षर अक्षरसे परे अक्षरातीत ही परम उपास्य इष्ट हैं। वे सच्चिदानन्द ब्रह्म ही अनन्त और मूल सत्य हैं ।

क्षर, अक्षर और अक्षरातीतकी तीन भूमियाँ जगत्, अक्षरधाम एवं परमधाम मानी गयी हैं। अक्षरधाम परमधामका ही अंग है और क्षर जगत् अक्षर ब्रह्मके कल्पना लोक, अव्याकृतमेंसे सूर्य किरणोंमें तैरते अणुओंकी भाँति प्रतीत हो रहा है। इस प्रतीतिका आधार अक्षर ब्रह्मकी माया या मूल प्रकृति है जो अपनी सम्मोहक शक्तिसे सत्यको ढँक कर असत्यके विस्तार द्वारा जीवात्माओंको मोहित या भ्रमित करती है ।

जब जल पृथ्वी, अग्नि, वायु आदि तत्त्वोंका विकास नहीं हुआ था, अक्षरने निराकार, निरंजन अवस्थाओंको विस्तृत नहीं किया था तब भी माया या मूल प्रकृतिका अस्तित्व अक्षर ब्रह्मके मनमें बीजरूपसे स्थित था । उस समय परमधाममें पूर्ण ब्रह्म परमात्माकी दिव्य लीलाएँ सम्पन्न हो रही थीं । परमधाममें नूरमयी, चिन्मय अखण्ड ऐश्वर्य युक्त, उन्नत,

असीम उच्च अट्टालिकाओं, महलोंके समान विस्तृत वृक्षावली, सागर, द्वीपादिका वर्णन परिक्रमा ग्रन्थमें किया गया है । महामति कहते हैं कि शब्दातीत लीलाको इसलिये शब्द दिये गये कि मनकी उड़ान रुके और आत्माको ध्यानका आधार मिल जाय । श्री राजश्यामाजीकी क्रीड़ा स्थली परमधाम चिन्मय है और शाश्वत आनन्द साधनोंसे भरपूर है । परब्रह्मकी आनन्द अंग श्री श्यामाकी अंग और कलास्वरूप आत्माएँ परमधाममें विहार करती हैं । उन ब्रह्मात्माओंको सत् चेतन और आनन्दकी अनुभूति दिलानेके लिये उन्हें क्षर जगतकी सुख-दुख पूर्ण लीला दिखाई गयी ।

सम्पूर्ण प्रकृतिका सूत्रधार अक्षर ब्रह्म हैं । जगत् रचनाके लिये सम्मोहनी मायाको विस्तरित किया गया तो उसने अपने आवरणसे सच्चिदानन्द स्वरूपको ओझल कर दिया । जब कुछ भी दिखायी न देने की स्थिति रह गयी तो उसका नाम निराकार, निरंजन और शून्य पड़ा । अक्षर ब्रह्म और ब्रह्मात्माओंने उस शून्य अवस्थामें मूल परमधाममें देखी वस्तुओंकी कल्पना की, उन्हें स्वप्नमें देखी वस्तुओंके समान जो कुछ भी देखा वही यह क्षर जगत् बना जो पल-पल मिटता चला जा रहा है ।

अक्षर ब्रह्म और ब्रह्मात्माओंकी सम्ममोहित स्वप्नित अवस्थाका नाम मोहसागर या नींद है । उसमें स्वप्नमें खड़े अपने स्वरूपकी तरह अक्षर ब्रह्म नारायण रूपमें प्रकट हुए । मैं एक हूँ अनेक हो जाऊँ यह विचार आते ही उनके अपनी ही अंग शेषजीने उनके लिये शय्या बनाई और महाविष्णु(लक्ष्मी सहित) उस पर विराजमान हुए । इन शेषशायी नारायणकी नाभिसे कमल सदृश सिंहासन प्रकट हुआ । उस पर ब्रह्मा, विष्णु, महेशका प्रादुर्भाव हुआ जो सत्, रज और तम गुणोंके प्रतीक और सृष्टा बने । पाँच तत्त्वोंका उद्गम हुआ तीन गुण और पाँच तत्त्वोंके संघर्षण और मिश्रणसे चौदह लोक सृष्टि अस्तित्वमें आई । उसमें जल कणोंमें सूर्यके प्रतिबिम्ब की तरह असंख्य देवोंने प्रकट होकर सृष्टि संचालन किया । ब्रह्मकी शक्तियोंके प्रतिबिम्बित रूप होनेके कारण वे सब ब्रह्म ही कहलाये । ब्रह्मके उत्कर्षको धारण करके वे पूज्य बन गये ।

जिस परमात्माकी माया है, वही इसे जानते हैं । निष्कलंकबुद्ध

महामतिके रूपमें प्रकट होकर अपनी आत्माओंको मायाका खेल दिखाकर लौटा ले जानेके लिये अवतरित हुए हैं । वही बुद्धजी ब्रह्मात्माओंकी पहचान बताकर जगतके बार–बार जन्मते मरते जीवोंको मुक्ति धामों बहिश्तोंमें अनन्त जीवन और परम सुख प्रदान करेंगे ।

जब जीव, जगत् और शरीरका मोह त्याग देता है तो वह इनके बन्धनसे मुक्त हो जाता है । मोक्ष प्राप्तिके लिये महामति जाग्रत गुरुकी शरणमें जानेका आग्रह करते हैं ।

महामत कहे गुरु सोई कीजे, जो अलख की देवे लख ।
इन उलटी से उलटाय के, पिया प्रेमे करे सनमुख ।।

–किरन्तन ४/१३

महामति सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीमें श्री श्यामाजीका और स्वयंमें इन्द्रावती सखीका अवतरण मानते हैं । श्री देवचन्द्रजीके शरीर त्याग देने पर श्यामा अक्षरातीतका आवेश, नूर हुक्म और तारतम(बुद्धि), लेकर इन्द्रावतीमें समाहित हुई तो वे महामति कहलाये । महामति ही सभी अवतारी पुरुषों, पीर, पैगम्बरोंके समूह अवतार हैं, जो समस्त जगत्को तारतम ज्योतिसे जगाने प्रगट हुए हैं ।

भई सोभा संसार में, अति बड़ी खूबी अपार ।
दुनियां उठाई पाक कर, न जरा रह्या विकार ।।

किरंतन ६१/२१

महामत कहें कोई दिल दे, ए देखेगा मजकूर ।
तिन रूह पर इमाम का, वरसे वतनी नूर ।।

–किरंतन १२२/८

महामति कहते हैं जो अपना हृदय समर्पित कर इस चर्चामें रहेंगे उन आत्माओं पर परमधामसे अवतरित इमाम महदी निष्कलंक बुधजीका नूर बरसेगा ।

सब लोग अपनी बुद्धिद्वारा कुरान, पुरान, वेद, कतेब सबके मनमाने काल्पनिक अर्थ कर रहे थे । महामतिने सबके स्पष्ट निर्धारित अर्थ किये ।

चौदह लोकोंकी उलझनें मिटाई । अनादि कालसे मनमें व्याप्त संशयोंको सुलझाकर मोह अहंकारको दूर किया । मानव खण्ड–खण्ड होकर द्वैत एवं दुनियाकी पीड़ा सहन कर रहे थे । ऐसे जटिल समयमें महामतिने तारतमके बन्धन सूत्रसे सबको एक कर दिया । महामति कहते हैं कि वेद कतेब ग्रन्थोंमें उद्‌घोषित कियामत, जागरण की घड़ी आ गयी है । मुहम्मद साहबके बाद ग्यारहवीं सदीमें आकर इमाम महदी बुद्ध निष्कलंकजीने सबके हिसाब बेबाक कर दिये ।

अब तो समया आय पोहोंचिया, मेरे तो लेना सिर ।
धनियें बानी करता मुझे किया, सो मैं मुख फेरूँ क्यों कर ॥

–किरंतन, ८६/४

अपने मुखसे उच्चारित ज्ञानके शब्दोंको जीवनमें उतार लेने एवं तदनुसार आचरण करनेका समय आ गया है, अब मैं पीछे नहीं हट सकता ।

हदीसोंमें लिखा है कि क्यामतके दिन इसराफील इमाम महदीके अन्दर बैठकर दो बार सूर फूँकेगा । पहली बारमें पहाड़ रूईकी तरह उड़ जायेंगे, दूसरे सूरमें सबको कायम किया जायेगा । महामतिने ज्ञानका बिगुल बजाकर थोथे कर्मकाण्ड, अज्ञान, अहङ्कारके पहाड़ उड़ाकर तारतम ज्ञानसे सबकों अखण्ड बहिश्तोंमें कायम किया । व्रज, रासके अक्षरातीत कृष्ण, हुकुम लानेवाले मुहम्मद, तारतम लानेवाले श्री देवचन्द्र और जागनी क्यामतके मालिक श्री प्राणनाथजीको पहचान कर बन्दगी करनेवाले क्यामतके दिन उठा लिये जायेंगे । उस दिन उनके कामोंका बड़ा भारी बदला मिलेगा । वे लोग फज्र या भोरके उजालेमें परमधाममें उठेंगे । महामति ने वर्ग, वर्ण, लिंग और जातिके भेद मिटाकर सबको परमगति दिलानेके लिये जागनीका संदेश दिया । पीड़ित हिन्दू वर्गमें स्वधर्म चेतना जगाकर उन्हें संगठित होकर अधर्मका सामना करनेका आदेश दिया तो अत्याचारी मुसलिम शासकोंको मुहम्मद साहबके कुरानकी दुहाई देकर कहा कि रसूलने मेहरसे भरे दिलवालेको मुसलमान कहा है । अपने धर्मके सत्यस्वरूपको पहचानो और जुल्म न करो ।

मुसलिम को मुसलिम की, हिन्दुओं को हिन्दुअन की तर ।
ए समझे सब अपनी मिने, जब आये इमाम आखर ॥ सनन्ध ३३/२०

महामतिने बताया कि मुहम्मद साहबने जिस हकीकी दीन इस्लामकी ओर संकेत किया था, उसे स्वयं इस्लाम और कुरानको माननेवालोंने नहीं समझा । उन्होंने कुरानको हिन्दू धर्म ग्रन्थोंके साथ मान्यता दी और उसके गुह्य शब्द संकेत सारी मानवताके लिये स्पष्ट कर दिये । उन्होंने गीताके अनुरूप सत्रहवीं शदीमें श्रीकृष्णके व्यापक स्वरूपकी अवतारणा की ।

महामति श्री प्राणनाथद्वारा प्रतिपादित श्रीकृष्ण पुष्टि मार्ग, हरिदास, चैतन्य महाप्रभु प्रेरित वैष्णव सम्प्रदायोंसे भी अधिक व्यापक हैं । गीताके पुरुषोत्तम कृष्ण ही उनके अक्षरातीत श्रीकृष्ण है । जो अंश रूपसे सभी अवतारोंमें प्रतिबिम्बित होते हुए भी उनसे भिन्न अन्य हैं । उन्होंने रसेश्वर कृष्णको लोक रंजक, धर्म रक्षक रूपमें भी देखा । लोकरंजक रूपमें वे रासके स्वरूप हैं और धर्म रक्षक रूपमें सत्य धर्मके प्रतिष्ठापक,

साहेब आए इन जिमी, कारज करने तीन ।
सबका झगड़ा मेट के, या दुनिया या दीन ॥

-खुलासा प्र.१३

वे मानते हैं कि जिस श्री कृष्णने व्रज औ रास लीला की, वही पैगम्बर ईसा-मूसाके ज्ञानको समाहित करनेवाला मुहम्मद हुआ । वही अब आखिरुल जमा इमाम मेहदी, निष्कलंक बुध रूपमें प्रकट होकर, धर्मग्रन्थोंकी कड़ियाँ मिलाकर सत्य धर्मकी प्रतिष्ठा कर रहा है ।

महामति प्राणनाथने जिस गहनतासे पुराण व कुरानका समन्वय किया वह उनकी अपनी धार्मिक आस्था थी । इसी समन्वयताके आधार पर साहित्यकारोंने उनकी वाणीको भक्तिकाल साहित्यकी पाँचवीं धारा स्वीकार किया है । इसमें उस समयकी चारों धाराओं सूफी, राम, कृष्ण और निर्गुणके कुछ न कुछ तत्त्व तो हैं ही, उनके साथ कुल अलगाव और वैचारिक वैशिष्ट्य भी मिलता है जो इनमेंसे किसी धारामें समाहित नहीं हो पाता । उनकी समन्वयवादी प्रवृत्तिने धर्मका व्यापक परिष्कृत रूप

प्रकट किया है । महामतिकी जागनीका स्वरूप उसी व्यापक स्वरूप पर केन्द्रित है। श्री प्राणनाथने श्री राज श्यामाके जिस युगलस्वरूपकी आराधना प्रतिपादित की, स्वयं देवी–देवता उसका ध्यान करते हैं, उसके संकेतो पर चलकर सृष्टि संचालन करते हैं ।

महामति श्री प्राणनाथ आत्माको परब्रह्मकी अर्द्धांगिनी या सखी मानकर परात्पर ब्रह्मकी मानसिक उपासना करनेका आग्रह करते हैं । ब्रह्म, ईश्वरी और जीव सृष्टिमें ब्रह्म नित्य मुक्त,तो ईश्वरी मुमुक्षु और जीव सृष्टि बद्धमुक्त है । इनके आचरण, साधनों एवं पूर्वाग्रहोंसे इन्हें पहचाना जा सकता है । यह सारा संसार चौदह लोकके अधिकारी देवताओंकी पूजा करता है, अनेक लोगोंको तो यह भी पता नहीं कि इनसे ऊपर भी कोई परम सत्ता विद्यामान है,

चौदे भवन के जो धनी, ए विश्व पूजत सब ताय ।.
ए सुध नहीं काहू को, कोई और है इस्तदाय ।।

–किरन्तन ७४/२२

अखण्ड परमधाममें श्याम–श्यामा अपनी अंगनाओं सहित विराजमान हैं । लीलाके लिये परमधामके पच्चीस पक्ष बताये गये । रंग महल, फूलबाग, नूर बाग, पश्चिम चौगान, महा बन, पुष्पराज पहाड़, यमुना सात घाट सहित, हौज कौसर, मानिक पहाड़, जवेरोंकी नहरें, आठ सागर और आठ भूमि खण्ड,

धाम तलाब कुञ्ज बन जोहे, मानिक नेहेर बन की सोहे ।
पश्चिम चौगान बड़ा बन कहिये, पुखराजी यमुनाजी लहिये ।
आठों सागर आठ जिमी के, ए पच्चीस पख श्री धाम धनी के ।।
नूर नीर क्षीर दधि सागर, घृत मधु एक ठौर ।
रस सर्वरस सागर, बिना मोमिन न पावे कौई और ।।

इसी परम धाममें परब्रह्म की दिव्य लीलाएं सम्पन्न होती हैं । सच्चिदानन्द ब्रह्म अद्वैत स्वरूप हैं, आत्माएँ उनके अंग हैं । समस्त परमधाम, वस्त्राभूषण आदि उनके नूरका विस्तार है । नित्य नवीन नूरमय

यौवनके तेजसे उनका अंग प्रत्यंग देदीप्यमान है । लीला सगुण रूपसे सम्भव है इसलिये परब्रह्मको सगुण, शुद्ध साकार चिन्मय स्वरूप कहा गया है और उसको पाना असम्भव है ।

जैसा बाहर होत है, जो होए ऐसा दिल ।.
तो अधखिन पीउ न्यारा नहीं, माहें रहो हिलमिल ।।

–किरन्तन १०८/३३

जो जिस भावनासे जैसी आराधना करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है,

जिन जैसा किबला सेविया, आंगू आया तैसा तिन ।.
दुनी कारन खोवें दीन को, तो आखर कही जलन ।।

–किरन्तन १०८/३३

महामतिका जागनी आन्दोलन आध्यात्मिक जागरणके लिये था परन्तु आत्म जागृतिके लिये सभी स्तरों पर सजग होना पड़ता है । इसलिये उन्होंने विश्व, देश, समाज और मानवकी कमियोंकी ओर भी ध्यान दिया और सुधार लानेका प्रयास किया । महामति रूढिग्रस्त वर्ण–वर्ग व्यवस्थाको जन्म पर आधारित नहीं मानते थे । उनकी दृष्टिमें मनुष्य तीन तरहके हैं । परमात्माके प्रेमी, साधनासे जीवन सुधारनेवाले और कर्मोंके अनुसार बार–बार जन्म लेनेवाले साधारण जीव । जन्म पर आधारित वर्ण व्यवस्थाने हिन्दू जातिको कुण्ठित कर दिया है । धार्मिक संकीर्णता, ओछे कर्मकाण्ड एवं अनावश्यक रूढ़ियोंको चलाते जानेका उन्होंने विरोध किया । औरंगजेब जैसे शक्तिशालीसे भी उन्होंने टक्कर ली । अपने जागनी आंदोलनमें वे अनेक राजाओंके सम्पर्कमें आए लेकिन कहीं भी उन राजाओंको धार्मिक संकीर्णतासे बँधने नहीं दिया ।

औरंगजेबकी धर्म विरोधी नीतिके विरुद्ध उन्होंने राजाओंको संगठित किया । महाराजा छत्रसालने इनके आह्वानको सुना । उसे उन्होंने आर्थिक सहायता, मनोबल एवं आत्मिक शक्ति प्रदान कर एक विशाल राज्यका स्वामी बना दिया । छत्रसालने भी अनेक मनस्वी प्रचारकोंको भेजकर महामतिका संदेश विश्वव्यापी बनाया ।

श्री कृष्ण प्रणामी धर्मकी टी वी चैनल

धर्मप्राण सुन्दरसाथजीको सूचित किया जाता है कि श्रीकृष्ण प्रणामी धर्मकी टी वी चैनल अब साकार रूप ले रही है । भारत सरकारसे लाईसन्स प्राप्त करनेकी सभी औपचारिकतायें पूर्ण हो गई हैं। अब शीघ्र ही लाईसन्स मिलनेकी संभावना है ।

आप सभीको विदित ही है कि सुन्दरसाथ जन गणनाका सर्वेक्षण चालु है । गुजरातके विभिन्न क्षेत्रोंकी गणना पूरी हो गई है । अन्य प्रदेशोंमें भी यह कार्य चालु है । आपके पास यदि फर्म नहीं आए हैं तो कृपया हमें सूचित करें । इस कार्यसे अपनी चैनलके डिस्ट्रीव्यूसनमें बड़ा सहयोग मिलेगा । साथ ही सुन्दरसाथको भी जन्मदिन तथा वैवाहिक वर्षगांठमें श्री ५ नवतनपुरी धामका आशीर्वाद प्राप्त होता रहेगा ।

श्रीकृष्ण प्रणामी धर्मके प्रचार–प्रसारको मीडिया द्वारा और तीव्रगति प्रदान करनेके लिए धार्मिक प्रशिक्षण हेतु एक संस्था अस्तित्वमें आई है । उसमें सुन्दरसाथ अपनी पूंजीका निवेश कर सकते हैं और उचित व्याज भी प्राप्त कर सकते हैं । इसका विस्तृत विवरण आपको देते रहेंगे । आपका थोड़ासा सहयोग धर्मके प्रचार–प्रसारके लिए महान सिद्ध होगा । आप अपनी पूरी तैयारी रखें ।

आपको यह भी विदित हो कि 'हमारा परमधाम' नामसे १५० एपिसोडका टीवी सिरीयल भी तैयार हो रहा है । वह भी २०१२ में विभिन्न चैनलों पर आएगा ।

इस प्रकार धर्मके प्रचार–प्रसारमें इलेक्ट्रोनिक्स मीडियाका पूरा उपयोग हमारी धार्मिक भावाओंको बढ़ानेके लिए एवं बालकोंको संस्कारित करनेके लिए है । इन कार्योंमें आपके पूर्ण योगदानकी अपेक्षा है ।

श्री ५ नवतनपुरी धाममें
प्राणनाथजी प्राकट्य महोत्सव

धर्मप्रेमी सुन्दरसाथजीको विदित ही है कि श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके आद्यपीठ एवं आचार्यपीठ श्री ५ नवतनपुरी धाममें प्रतिवर्ष श्री प्राणनाथ प्राकट्य महोत्सव धूमधामसे मनाया जाता है। प्रतिवर्षानुरूप इस वर्ष भी यह महोत्सव दिनांक २६ सितम्बर २०११ से १ अक्तूबर २०११ पर्यन्त भव्यातिभव्य रूपसे मनाया जायेगा।

इस पावन अवसर पर श्री तारतमसागरके १०८ पञ्चदिवसीय पारायणका सुन्दर आयोजन है। इसके साथ-साथ श्रीतारतम सागर (वाणी) चरचा, भजन, कीर्तन एवं रास गरबा जैसे विभिन्न कार्यक्रमोंका भी भव्य आयोजन है।

सभी सुन्दरसाथजीको इस पावन महोत्सवमें उपस्थित होकर पाठ-पारायण, श्री राजजीके दर्शन, पूजन, भजन, एवं कीर्तन आदिका लाभ लेकर जीवनको धन्य बनानेके लिए सादर आमन्त्रण करते हैं।

: प्रमुख कार्यक्रम :

- प्राकट्य आरती तथा ध्वजारोहण :
  दिनांक २६/०९/१०११ प्रातः १० बजे
- शोभायात्रा : दिनांक २६/०९/१०११अपराह्न ४ बजे
- पारायण शु भारम्भ : दिनांक २७/०९/१०११प्रातः ८ बजे
- पारायण पूर्णाहुति : दिनांक ०१/१०/१०११प्रातः ८ बजे
- छट्ठी महोत्सव : दिनांक ०१/१०/१०११ प्रातः ९.३०बजे

भजन

ब्रह्मप्रियांओंने जहाँ पर लिया, राज श्यामाका नाम
है सुन्दर नवतनपुरी धाम,
पावन नवतनपुरी धाम
है दिव्य नवतनपुरी धाम,
सखियोंने जहां रास रचाई, लेके पियाका नाम । है सुन्दर....(१)

राजजी- पहले धनीजीने सोचा मनमें,
सखीयोंको मैं खेल दिखाऊँ,
देख अक्षरको सखियोंने पूछा,
कौन हैं पिया ए कित इनको ठाऊ-२
सुनलो सखियां.........धामके मेरे.........
खेल बनाते हैं जो दु:खका, अक्षर ब्रह्म नाम । है सुन्दर....(२)

सखी-कैसा खेल बनाते हैं अक्षर,
कैसा हैं संसार कैसी माया,
हमें भी दिखाओ झूठे खेलको,
जो है अक्षरब्रह्ममें समाया-२
हम जाएगें........खेल देखने.......
बैठी खेल देखने सखियां, लेके पियाका नाम । है सुन्दर....(३)

राजजी-समझाऊ मैं कैसे तुमको
हे मेरी प्राण प्यारी सखियाँ,
भूल जाओगी जाकर मुझको,
याद न आएगी मेरी बतियां,
मान लो सखियां.......वात हमारी......
पत्थर पानी ऐसे पूजोगी, भूलोगी मेरा नाम । है सुन्दर....(४)

सखी– पहले दिखाए लीला व्रजकी,
फिर दिखाए महारास,
पूरी हुई नहीं इच्छा देखनक,
मनमें कछु रही गयो आस,
फिरसे आए..............खेल देखने..........
व्रज रास और तीसरा, जागनी हुआ है नाम । है सुन्दर....(५)

राजजी–श्यामाजी आई सतगुरु बनके
अपनी प्यारी सखियां बुलाने,
लगाया है खीजडा हाथोंसे अपने,
लगे अब साथको पियासे मिलाने,
प्रगट कर दी.......श्री जमुनाजी.......
'अनुरागी' सखी पार उतर गई, जपते निजनाम । है सुन्दर....(६)

अनुरागी–वाराणसी

साहित्य सेवा

काठमाडौं(नेपाल) : धर्मप्रेमी सुन्दरसाथ श्री हरिशंकर श्रेष्ठकी माता सानुमाया श्रेष्ठकी पुण्य स्मृतिमें श्री ५ नवतनपुरी धाममें रसोईकी सेवा प्रदान कर श्री कृष्ण प्रणामी धर्म प्रत्रिकाकी साहित्य सेवामें रु. ३०१/ अर्पण किया है। धामवासी आत्माको श्री राजजी महाराज अपने चरणमें आश्रय दें यही प्रार्थना।

पटना : श्री अमृतलाल शंकरलाल श्रीमालीद्वारा श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकाकी साहित्य सेवामें रु. २०१/ भेट प्राप्त हुई है। श्री ५ नवतनपुरी धामके आशीर्वा ।

जामनगर : श्रीमती मीनाबहन सनतकुमार धिमालके सुपुत्र चि. दर्शनने दिनांक ११–०८–२०११ को द्वितीय वर्षमें प्रवेश किया। इसी खुशीमें श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकाकी साहित्य सेवामें रु.१५१/ प्रदान किया है। श्री राजजी महाराज चि.दर्शनको सुस्वास्थ्यपूर्ण दीर्घायु प्रदान करें इन्हीं शुभकामनायें।

गौशालाकी सेवा

एक गायकी सेवा रु. ११०००/ देनेवाले दाता

धामवासी केशवजीभाई वीरजीभाई संघाणी-	जामनगर
धामवासी नारायणभाई धरमशीभाई-	जामनगर(भगेडी)
धामवासी नागजीभाई पूंजाभाई भंडेरी-	मांडासण

धामवासी यशवंतीबेन नटवरलाल भावसार-सेलवास(हाल. यु.एस. ए.)

धामवासी कुमुदबेन तथा मणिकलाबेन गुलाबदास पेन्टर-मुंबई.

धामवासी पवित्राबाई तथा खेमदास न्यौपाने-	नेपाल
धर्मज्ञा निर्मला बंसल-	गुवाहाटी(आसाम)
धर्मज्ञा शंकुतला गुप्ता-	गुवाहाटी(आसाम)
धर्मज्ञा सपना गुप्ता-	गुवाहाटी(आसाम)

घासचारा, दाना एवं अन्य सेवा प्रदान करनेवाले सुन्दरसाथ

धामवासी कौशिकभाई चन्दुभाई, राजकोट	रु. ५०००/
धर्मज्ञा शांताबेन रमणलाल पटेल, हनपुर	रु. २५०१/
पुरुषोत्तमभाई प्रेमजीभाई, रायपुर	रु. ५००१/
मुकेशभाई मोमायाभाई पटेल, बोरीवली(मुंबई)	रु. ५०००/
कांतिभाई पटेल, देवपर(कच्छ)	रु.२५०१/
धामवासी जीवीबेन रामजीभाई भंडेरी, जामनगर	रु. ७७००/
श्री राजश्यामाजी महेर करो, परमधाम	रु. ५१००/
धामवासी नागजीभाई पुंजाभाई भंडेरी, हस्ते : पोलाभाई नागजीभाई भंडेरी. मांडासण	रु. ७०००/
धर्मज्ञा जशुबेन भावसार-वलसाड(हाल. यु.एस. ए.)	रु.२६१३/
धर्मज्ञा पुष्पाबेन अग्रवाल-गुवाहाटी(आसाम)	रु. २५००/

धामवासी वसरामभाई पूंजाभाई पादरियाकी पावन स्मृतिमें गौशालमें ६१ मन हराजुवार प्राप्त हुआ है । ह. नानजीभाई- राजकोट

रवजीभाई बेचरभाई पीरोदिया तरफथी गौशालामें ६१ मन हरा जुवार प्राप्त हुआ है ।

जुलाई महिनेकी रसोई सेवा

०१)	श्री गिरधरभाई भवानभाई कालसरिया	जामनगर
०२)	धा.वा.कौशिकभाई चन्दुभाई वेकरिया	लोधिका
०३)	धा.वा.श्री जशराजजी महाराज	अहमदाबाद
०४)	श्रीमती अंकिताबहन देवशीभाई सोलंकी	जूनागढ
०५)	श्री करशनभाई भगवानभाई राखोलिया	रातीधार
०६)	श्री मगनभाई शामजीभाई पानसुरिया	मोटी मेंगणी
०७)	धा.वा. रसिकलाल दुर्लभजीभाई राठोड	राजकोट
०८)	श्री दामजीभाई धरमशीभाई चोवटिया	हर्षदपुर
०९)	श्री विपुलभाई गणेशभाई मोलिया	जामनगर
१०)	श्री महेन्द्रभाई भाईलालभाई देसाई	राजकोट
११)	श्री जमनभाई गोविन्दभाई भण्डेरी	भरतपुर
१२)	श्री मोहनभाई विरजीभाई संघाणी	जामनगर
१३)	श्री भरतभाई वालजीभाई ठुमर	राजकोट
१४)	धा.वा. राजेशकुमार चम्पकलाल शाह	अमदावाद
१५)	धा.वा. बाबुभाई गणेशभाई गोहिल	वाडाधरी
१६)	श्री करशनभाई जेसरभाई ठुमर	गोण्डल
१७)	श्री हरिशंकर श्रेष्ठ	काठमाडौं(नेपाल)
१८)	श्रीमती कान्ताबेन तुलसीदास ठक्कर	मुम्बई
१९)	धा.वा. यादवजीभाई प्रागजीभाई माणेक	मुम्बई
२०)	श्री केशवलाल परबतभाई रूडाणी	देवपर(कच्छ)
२१)	धा.वा. वसरामभाई नानजीभाई टीलारा	जामनगर
२२)	श्री पवनकुमार श्रीमंगतराम गोयल	हिसार(हरियाणा)
२३)	श्री ओतमबेन रणछोडभाई कमाणी	नवागढ(जेतपुर)
२४)	धा.वा. सन्तोकबहेन वेलजीभाई सावलिया	लतीपुर
२५)	श्री मुकेशभाई गोरधनभाई मुंगरा	जामनगर
२६)	श्री रमेशभाई भोवानभाई वागडिया	धावा(गीर)
२७)	श्री परसोतमभाई प्रेमजीभाई वाढेर	रायपुर(छ.ग.)

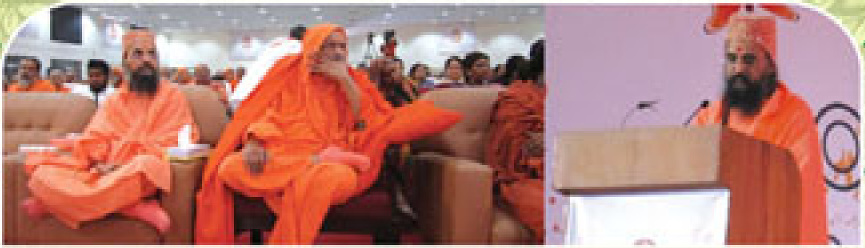

स्वामी दयानन्द सरस्वती शताभिषेक समारोहमें प्रासंगिक उद्बोधन करते हुए
एवं स्वामी दयानन्द सरस्वतीजीके साथ परम पूज्य आचार्य महाराजश्री ।

पुन:निर्माणाधीन श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर गणदेवीमें आयोजित
सत्संग समारोहमें आर्शीर्वाद प्रदान करते हुए परम पूज्य आचार्य महाराजश्री ।

श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर पोरबन्दरमें बीतक कथा प्रसंग पर
उद्बोधन करते हुए परम पूज्य आचार्य महाराजश्री ।

जामनगर स्थित स्मशान भूमिको आदर्श स्मशान भूमि बनानेके लिए
आयोजित कार्यक्रममें अध्यक्षीय उद्बोधन करते हुए परम पूज्य आचार्य महाराजश्री ।

RNI No. GUJ BIL /2006/18311 Registration No. GJN-1 / 2009-2011

शेम्पेन I.L.L अमेरिकामें आयोजित एकदिवसीय पारायण,
शोभायात्रा एवं सत्संगके विविध दृश्य ।

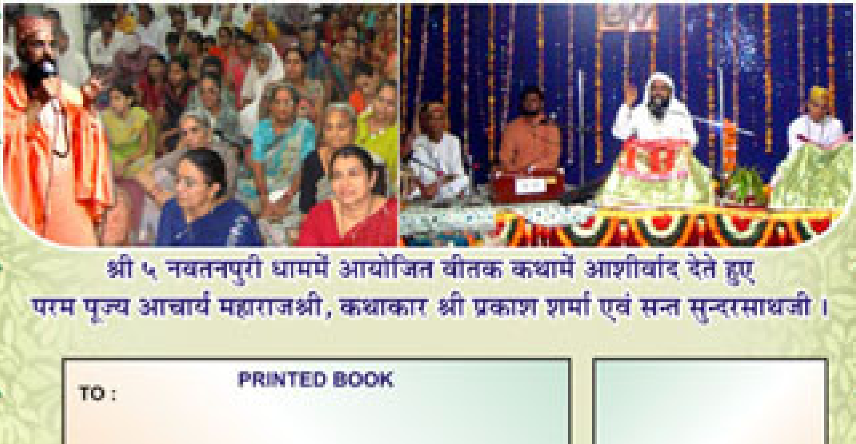

श्री ५ नवतनपुरी धाममें आयोजित बीतक कथामें आशीर्वाद देते हुए
परम पूज्य आचार्य महाराजश्री, कथाकार श्री प्रकाश शर्मा एवं सन्त सुन्दरसाथजी ।

PRINTED BOOK

TO :

SHRI KRISHNA PRANAMI DHARMA PATRIKA
SHRI 5 NAVTANPURI DHAM , JAMNAGAR - 361 001 (INDIA)